गंगा चालीसा

॥ दोहा ॥

जय जय जय जग पावनी जयति देवसरि गंग।

जय शिव जटा निवासिनी अनुपम तुंग तरंग॥

हिन्दीपथ.कॉम

॥ चौपाई॥

जय जग जननि हरण अघ खानी,

आनन्द करनि गंग महारानी।

जय भागीरथि सुरसरि माता,

कलिमल मूल दलनि विख्याता।

जय जय जय हनु सुता अघ हननी,

भीषम की माता जग जननी।

धवल कमल दल मम तनु साजे,

लखि शत शरद चन्द्र छवि लाजे।

वाहन मकर विमल शुचि सोहै,

अमिय कलश कर लखि मन मोहै।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

जड़ित रत्न कंचन आभूषण,

हिय मणि हार, हरणितम दूषण।

जग पावनि त्रय ताप नसावनि,

तरल तरंग तंग मन भावनि।

जो गणपति अति पूज्य प्रधाना,

तिहुँ ते प्रथम गंग अस्नाना।

ब्रह्म कमण्डल वासिनी देवी

श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

साठि सहत्र सगर सुत तारयो,

गंगा सागर तीरथ धारयो।

अगम तरंग उठयो मन भावन,

लखि तीरथ हरिद्वार सुहावन।

तीरथ राज प्रयाग अक्षैवट,

धरयौ मातु पुनि काशी करवट।

धनि धनि सुरसिर स्वर्ग की सीढ़ी,

तारणि अमित पितृ पद पीढ़ी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

भागीरथ तप कियो अपारा,

दियो ब्रह्म तब सुरसरि धारा।

जब जग जननी चल्यो लहराई,

शंभु जटा महँ रह्यो समाई।

वर्ष पर्यन्त गंग महारानी,

रहीं शंभु के जटा भुलानी।

मुनि भागीरथ शंभुहिं ध्यायो,

तब इक बून्द जटा से पायो।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

ताते मातु भई त्रय धारा,

मृत्यु लोक, नभ अरु पातारा।

गई पाताल प्रभावति नामा,

मन्दाकिनी गई गगन ललामा।

मृत्यु लोक जाह्नवी सुहावनि,

कलिमल हरणि अगम जग पावनि।

धनि मइया तव महिमा भारी,

धर्म धुरि कलि कलुष कुठारी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मातु प्रभावति धनि मन्दाकिनी,

धनि सुरसरित सकल भयनासिनी।

पान करत निर्मल गंगाजल,

पावत मन इच्छित अनन्त फल।

पूरब जन्म पुण्य जब जागत,

तबहिं ध्यान गंगा महं लागत।

जई पगु सुरसरि हेतु उठावहि,

तइ जगि अश्वमेध फल पावहि।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

महा पतित जिन काहु न तारे,

तिन तारे इक नाम तिहारे।

शत योजनहू से जो ध्यावहिं,

निश्चय विष्णु लोक पद पावहिं।

नाम भजत अगणित अझा नाशै,

विमल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशै।

जिमि धन मूल धर्म अरु दाना,

धर्म मूल गंगाजल पाना।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

तव गुण गुणन करत सुख भाजत,

गृह गृह सम्पत्ति सुमति विराजत।

गंगहि नेम सहित निज ध्यावत,

दुर्जनहूँ सज्जन पद पावत।

बुद्धिहीन विद्या बल पावै,

रोगी रोग मुक्त है जावे।

गंगा गंगा जो नर कहहीं,

भूखे नंगे कबहुँ न रहहीं।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

निकसत की मुख गंगा माई,

श्रवण दाबि यम चलहिं पराई।

महाँ अधिन अधमन कहँ तारें,

भए नर्क के बन्द किवारे।

जो नर जपै गंग शत नामा,

सकल सिद्ध पूरण है कामा।

हिन्दीपथ.कॉम

सब सुख भोग परम पद पावहिं,

आवागमन रहित है नहीं ।

धनि मइया सुरसरि सुखदैनी,

धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी।

ककरा ग्राम ऋषि दुर्वासा,

सुन्दरदास गंगा कर दासा।

जो यह पढ़े गंगा चालीसा,

मिलै भक्त अविरल वागीसा ॥

॥ दोहा ॥

नित नव सुख सम्पति लहैं,

धेरै, गंग का ध्यान ।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अन्त समय सुरपुर बसै,

सादर बैठि विमान॥

सम्वत् भुज नभ दिशि,

राम जन्म दिन चैत्र।

पूरण चालीसा कियो,

हरि भक्तन हित नैत्र॥

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा